युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि

के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रेस विज्ञप्ति

श्रीरामकथा ज्ञान–यज्ञ

गोरखपुर 03 सितम्बर, 2020। गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जी** की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित वाल्मीकि रामायण पर आधारित संगीतमय रामकथा के पांचवे दिन कि कथा में कथा व्यास **अनन्त श्री विभूषित जगतगुरु स्वामी रामानुजाचार्य श्री राघवाचार्य जी महाराज** ने कहा कि रघुनंदन भगवान श्री राम के चरणों में मन लगाने से शांति व सुख की प्राप्ति होती है। अन्यत्र सांसारिक विषयों में सुख का केवल आभास मात्र है तथा जीव को वास्तविक आनन्द तो भगवत चिंतन व भगवत शरणागति में ही प्राप्त होती है। यह जीवात्मा उस आनंद सिंधु परमात्मा का अंश है। जीव–ब्रह्म, प्रकृति–माया व सृष्टि का पालन व संघार का जो क्रम है, वह अनादि काल से चला आ रहा है, इसलिए यहां सब कुछ सनातन हैं। यही सनातन धर्म है।

कथा व्यास ने कहा कि आनंद स्वरूप ब्रह्म से ही संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। अंत काल में उसी आनंद तत्व परमात्मा में सारी सृष्टि का लय हो जाता है। जहां जाकर वाणी लौट आती है, जिसका वर्णन करने में वाणी असमर्थ हो जाती है। मन की गति जहां बाधित हो जाती है वही आनंद तत्व परमात्मा कहा जाता है। उस आनंद तत्व में जब जीव का चंचल चित्त विलीन हो जाए यही सुखी होने का तथा दुख से निवृत होने का शाश्वत उपाय है।

कथा व्यास ने कहा कि उस आनंद सिंधु परमात्मा की जो विभिन्न तरंगें हैं, वे तरंगे ही नाम–रूप में अनुभूत होती हैं। वे तरंगे अनुभूत होते हुए भी उस आनंदकंद परम ब्रह्म से अभिन्न हैं। जिस प्रकार समुद्र को देखकर कोई व्यक्ति उसे समुद्र का जल, कोई उसे समुद्र, और कोई उसे तरंग नाम से पुकारता है लेकिन वह समुद्र ही है। उसी प्रकार आनंद सिंधु परमात्मा की जो तरंगे हैं, नाम–रूप से वह व्यवहारिक रूप में तो भिन्न हैं लेकिन वास्तव में अभिन्न ही हैं।

कथा व्यास ने कहा कि कथा के रूप में भगवान ही हमारे अंदर प्रवेश करते हैं और हमारे हृदय के भावना के अनुकूल भाषित होते हैं, इसीलिए बड़े–बड़े ऋषि–महात्मा निरंतर भगवान की कथा में ही रमण करते हैं और जो जीवन मुक्त ऋषि–महात्मा जन हैं वे भी सच्चिदानंद स्वरूप परमात्मा की कथा को सुनने में ही लगे रहते हैं। इसीलिए भगवान शिव ने भी रघुनंदन श्रीराम से आशीर्वाद के रूप में भक्ति व सत्संगति को ही मांगी थी।

कथा व्यास ने पंच यज्ञ कन्याओं–कुंती, द्रौपदी, अहिल्या, तारा, मंदोदरी का वर्णन करते हुए कहा कि अहिल्या पंच यज्ञ कन्याओं में गिनी जाती हैं। पंच यज्ञ कन्याओं के रूप में इनकी पवित्रता का हमारे शास्त्रों में बड़े विस्तार से वर्णन है। इनके नाम का उच्चारण प्रतिदिन करने से जीव मात्र के सकल पाप नष्ट हो जाते हैं। इस पृथ्वी पर भगवान का अवतार अलग–अलग प्राणियों को अलग–अलग शिक्षा प्रदान करने के लिए होता है। भगवान की दृष्टि उस दीन–हीन पर ही पड़ती है जिस पर किसी अन्य की दृष्टि नहीं पड़ती। भगवान श्रीराम, रामावतार में अपने ऐश्वर्य और परमात्म तत्व को कभी प्रदर्शित नहीं करते हैं क्योंकि वे एक सामान्य व्यक्ति की तरह मर्यादित पुरुष के रूप में अपने आदर्श को स्थापित करते हैं ताकि सामान्य जन भी उनके आचरण का अनुसरण कर सकें। भगवान रघुनन्दन श्रीराम इतने कृपालु

हैं कि सुग्रीव जैसे राज से निस्कासित वानर की बात को भी स्वीकार करते हैं और अपने संकल्प मात्र से एक ही बांण सात ताड़ के वृक्षों को भेदन करते हैं जो बालि के अजेय होने का प्रमाण था। इस प्रकार जो भी भगवान के शरण में निश्छल होकर शरण में आएगा भगवान उसे अभय प्रदान करते हैं।

आज की कथा में ताड़का वध, अहिल्या उद्धार, पुष्प वाटिका, राजा जनक का संताप एवं भगवान श्रीराम द्वारा धनुष यज्ञ में भगवान शिव के धनुष खंडन के कथा का संगीतमय रसपान श्रद्धालुओं ने किया।

कथा के बीच में कथा व्यास द्वारा अनेक भजन गाए गयें, जिस पर भक्तगण झूमते रहे। सम्पूर्ण कथा **'श्रीगोरखनाथ मन्दिर'** के फेसबुक पेज एवं यूट्यूब चैनल के माध्यम से सजीव प्रसारण हुआ तथा कथा सभागार में 80 श्रद्धालुओं की बैठने की व्यवस्था थी और सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए कथा का श्रवण किये।

कथा का समापन आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ हुआ। संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह जी ने किया। इस अवसर पर प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, महन्त मिथिलेशनाथ जी महाराज, डॉ0 अरविन्द कुमार चतुर्वेदी, डॉ0 प्रांगेश कुमार मिश्र, डॉ0 अभिषेक पाण्डेय, बृजेशमणि मिश्र, डॉ0 रोहित कुमार मिश्र, डॉ0 दिग्विजय शुक्ल, दीप नारायण कन्नौजिया, नित्यानन्द तिवारी, विनय गौतम, विकास जालान, महेश पोद्दार आदि उपस्थित रहें।